

अगूढव्यंग्या लक्षणा स्त्री. (तत्.) काव्य. काव्यशास्त्र में प्रयोजनवती लक्षणा का एक प्रकार जिसमें व्यंग्य गूढ़ नहीं होता अपितु स्पष्ट रहता है और सरलता से बोधगम्य होता है।

अगेय वि. (तत्.) जो गाया नहीं जा सके। जो गाए जाने योग्य न हो।

अगेर. क्रि.वि. (तद्.) समक्ष, आगे।

अगोई वि. (तद्.) 1. अगोपित जो छिपाया न गया हो 2. प्रकट, स्पष्ट।

अगोचर वि. (तत्.) 1. जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा संभव न हो, जिसका बोध न हो सके 2. अप्रकट, अस्पष्ट, अव्यक्त पुं. (तत्.) ब्रह्मा, जो इंद्रियगम्य नहीं है जिसे देखा नहीं जा सकता विलो. गोचर।

अगोचरता स्त्री. (तत्.) अदृश्य होने का भाव, अप्रकट होने की स्थिति।

अगोट पुं. (तद्.) रोक, ओट, आड़ **स्त्री.** (तद्.) आश्रय, सहारा, आधार **वि.** (तद्.) एकाकी, अकेला।

अगोटना स.क्रि. (तद्.) 1. रोकना, रोक रखना, बंद करना 2. अंगीकार करना, स्वीकार करना 3. चयन करना, चुनना। **अ.क्रि.** (तद्.) रुकना, ठहरना, अड़ना, फँसना, उलझना।

अगोती वि. (तद्.) जो अपने गोत्र से संबंधित न हो।

अगोपनीय वि. (तत्.) प्रश्ना. जिसकी जानकारी दूसरे को होने में या जिसके सार्वजनिक होने में कोई दोष या आपत्ति न हो विलो. गोपनीय।

अगोरना स.क्रि. (तद्.) 1. राह देखना, बाट जोहना, इंतजार करना, प्रतीक्षा करना 2. रोकना।

अगोरा पुं. (तत्.) अगोरने की क्रिया, निगरानी, चौकसी।

अगोराई स्त्री. (तद्.) रखवाली करने की क्रिया।

अगोरिया पुं. (तद्.) खेत की रखवाली करने वाला, रखवाला।

अगौरी पुं. (तद्.) ईख के ऊपर का वह भाग जो पतला और अपेक्षाकृत कम मीठा या रसहीन होता है।

अगौली स्त्री. (तद्.) ईख की एक जाति जो छोटी और कड़ी होती है।

अग्नायी स्त्री. (तद्.) 1. अग्नि की स्त्री, स्वाहा 2. त्रेतायुग।

अग्नि स्त्री. (तत्.) 1. आग 2. पंचमहाभूतों में से तेजस तत्व 3. उष्णता, गरमी 4. प्रकाश 5. जठराग्नि 6. पित्त 7. चित्रक 8. वैद्यक के मतानुसार अग्नि के तीन भेद (क) भौमाग्नि (काष्ठादि से उत्पन्न) (ख) दिव्याग्नि (बिजली, उल्का आदि) (ग) जठराग्नि (जो उदर में भोजन को पचाती है) 9. कर्मकांड के अनुसार अग्निकेतीन भेद (क) गार्हपत्य (ख) आहवनीय (ग) दक्षिणाग्नि 10. शरीस्थ दस अग्नियां: भ्राजक, रंजक, क्लेदक, द्रावक, स्नेहक, धारक, बंधक, मापक, व्यापक और श्लेष्मक।

अग्निकण पुं. (तत्.) चिनगारी, स्फुलिंग।

अग्निकर्म पुं. (तत्.) 1. हवन, अग्निहोत्र 2. अग्नि-संस्कार, शवदाह 3. गर्म लोहे से दागने का कार्य।

अग्निकांड पुं. (तत्.) भयंकर आग लगना, आगजनी।

अग्निकाष्ठ पुं. (तत्.) 'अरणी' वृक्ष की लकड़ी जिसके दो टुकड़ों को परस्पर रगड़कर यज्ञ या हवन के लिए अग्नि उत्पन्न की जाती है टि. अरणिकाष्ठ को परस्पर रगड़ने की क्रिया अरणिमंथन कहलाती है।)

अग्निकीट पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार का कीट जिसे 'जुगनू' कहते हैं 2. अग्नि में रहने वाला एक कल्पित कीट।

अग्निकुंड पुं. (तत्.) वैदिक नियमानुसार यज्ञ/हवन के लिए जमीन में खोदा गया कुंड या गड्ढा।